अपठित गद्यांश

गांधी जी का जीवन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि वे नैतिक मूल्यों और मानवीय रिश्तों की पवित्रता के भी प्रबल समर्थक थे। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने प्रवासी भारतीयों को यह सिखाया कि समानता केवल रंग या जाति के भेद मिटाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें आपसी प्रेम, सहयोग और विश्वास का रिश्ता भी होना चाहिए। उनका मानना था कि सच्चा समाज वही है जिसमें हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग या पेशे से हो, समान सम्मान पाए। भारत लौटने के बाद गांधी जी ने इस विचार को और व्यापक बनाया। विदेशी शासन के अन्याय और अत्याचार के खिलाफ उन्होंने देशवासियों को एकजुट किया, परन्तु उनका सबसे बड़ा आग्रह यह था कि संघर्ष में अहिंसा, धैर्य और नैतिकता बनी रहे। वे मानते थे कि यदि स्वतंत्रता की नींव नफरत या प्रतिशोध पर रखी जाएगी, तो वह स्थायी नहीं रह पाएगी। उनके अनुसार बंधुत्व, सद्भावना और स्नेह ऐसे फूल हैं जो मानवता की शाखा पर हमेशा महकते रहते हैं और पूरे समाज को सुगंधित करते हैं।

गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. गांधी जी के अनुसार सच्चा समाज कैसा होना चाहिए?

a) जिसमें केवल राजनीतिक आज़ादी हो ☐

b) जिसमें हर व्यक्ति को समान सम्मान मिले ☐

c) जिसमें सिर्फ अमीर लोगों का बोलबाला हो ☐

d) जिसमें कठोर अनुशासन हो ☐

2. गांधी जी के अनुसार स्वतंत्रता की नींव _____ या प्रतिशोध पर नहीं रखी जानी चाहिए।

3. "अहिंसा" का विलोम लिखिए।

_____

4."सद्भावना" का पर्यायवाची लिखिए।

_____

5. गांधी जी संघर्ष में अहिंसा और नैतिकता पर जोर क्यों देते थे?

उत्तर:_____

_____

Answer

1. गांधी जी के अनुसार सच्चा समाज कैसा होना चाहिए?

उत्तर: b) जिसमें हर व्यक्ति को समान सम्मान मिले

2. गांधी जी के अनुसार स्वतंत्रता की नींव _____ या प्रतिशोध पर नहीं रखी जानी चाहिए।

उत्तर: नफरत

3. "अहिंसा" का विलोम लिखिए।

उत्तर: हिंसा

4. "सद्भावना" का पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर: शुभेच्छा / मंगलभाव

5. गांधी जी संघर्ष में अहिंसा और नैतिकता पर जोर क्यों देते थे?

उत्तर: क्योंकि वे मानते थे कि स्वतंत्रता तभी स्थायी होगी जब उसकी नींव प्रेम, बंधुत्व और नैतिकता पर रखी जाएगी, न कि नफरत या प्रतिशोध पर।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com